हम
भिन्न हैं

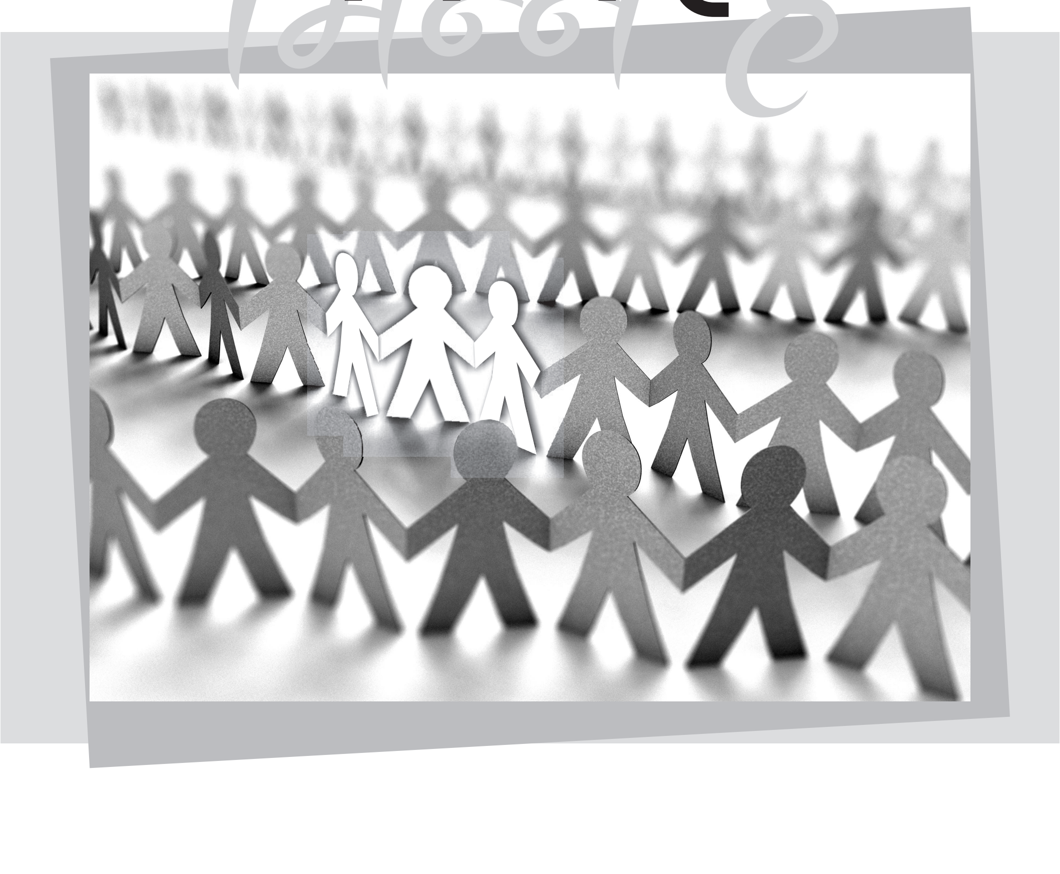

आशीष रायचूर

Back Cover

आप और मैं परमेश्वर के ''अपने विशेष लोग'' हैं। यदि आप मसीही–एक विश्वासी हैं–आप योग्य हैं। बाइबल बताती है कि हम क्यों ''एक चुने हुए वंश, एक राज–पदधारी, एक पवित्र प्रजा, उसके अपने विशेष लोग'' हैं क्योंकि हमें उसकी, जिसने हमें अंधकार में से अपनी ज्योति में बुलाया है, की प्रशंसा, महानता, अद्‌भुतता के गुणों को प्रकट करना है।

अत: जब लोग हम मसीहियों को देखें तो ये देखें कि वह परमेश्वर जिसने हमें बुलाया है कितना महान, गुणी और अद्‌भुत है।

आप और मैं पृथ्वी पर इसलिए हैं ताकि भले परमेश्वर को प्रकट कर सकें। हम भिन्न हैं!

आशीष रायचूर

© आशीष रायचूर, पास्टर
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2009 जुलै

प्रबन्ध सम्पादक/मुख्य प्रकाशक : वैलेन्टीना हूबर्ट
सहायक सम्पादक : आरती रेचल यशायाह
अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

पत्राचार का पताः
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर–560064
कर्नाटक, भारत

फोन + 91–80–23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का निशुल्क वितरण ऑल पीपुल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा सम्भव हुआ है।

हम
भिन्न हैं

विषय-वस्तु

1. अंधकार से उसकी ज्योति में बुलाए गए 1

2. परमेश्वर का वचन बनाम संसार की संस्कृति 7

3. हम भिन्न हैं 9

1

अंधकार से उसकी ज्योति में बुलाए गए

पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो (1 पतरस 2:9)।

आप और मैं परमेश्वर के ''अपने विशेष लोग'' हैं। यदि आप मसीही–एक विश्वासी हैं–आप योग्य हैं। बाइबल बताती है कि हम क्यों ''एक चुने हुए वंश, एक राज-पदधारी, एक पवित्र प्रजा, उसके अपने विशेष लोग'' हैं क्योंकि हमें उसकी, जिसने हमें अंधकार में से अपनी ज्योति में बुलाया है, की प्रशंसा, महानता, अद्‌भुतता के गुणों को प्रकट करना है। अत: जब लोग हम मसीहियों को देखें तो ये देखें कि वह परमेश्वर जिसने हमें बुलाया है कितना महान, गुणी और अद्‌भुत है। आप और मैं पृथ्वी पर इसलिए हैं ताकि भले परमेश्वर को प्रकट कर सकें।

बाइबल कहती है कि ''हम अंधकार से उसकी ज्योति में बुलाए गए हैं।'' एक समय था जब हम अंधकारपूर्ण वातावरण में रह रहे थे। हमारे विचार के तरीके, व्यवहार और संस्कृति उसी के द्वारा ढाली गई थी। परन्तु परमेश्वर ने हमें उसमें से खींच लिया और ज्योति में ले आया। अब ज्योति हमारा वातावरण बन गया है और हमारे विचार, व्यवहार और संस्कृति इसी के द्वारा संचालित होते हैं। चूंकि अब हम ज्योति हैं और अंधकार के हिस्से नहीं हैं. अत: हम वास्तव में भिन्न हैं। आमीन।

अंधकार–जैसा नए नियम में बताया गया है

एक ऐसा स्थान जहाँ वे सब जो बुराई करते हैं छिपे हैं

और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और

मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे (यूहन्ना 3:19)।

लोगों ने ज्योति से अधिक अंधकार को प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। अत: अंधकार एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर वे लोग जो बुराई करते हैं, छिपते हैं।

शैतान की शक्ति

कि तू उनकी आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने के द्वारा पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं (प्रेरितों के काम 26:18)।

प्रभु ने पौलुस से कहा, ''मैं चाहता हूँ कि तू लोगों को अंधकार से ज्योति में, शैतान की सामर्थ से परमेश्वर की ओर लेकर आए।'' अत: ''अंधकार'' शब्द वास्तव में शैतान की सामर्थ को प्रकट करता है।

वे लोग जो आत्मिक रूप से अंधे हैं

और अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अन्धों का अगुवा, और अन्धकार में पड़े हुओं की ज्योति (रोमियों 2:19)।

बिना उद्धार पाए हुओं का क्षेत्र

अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? (2 कुरिन्थियों 6:14,15)।''

2 कुरिन्थियों 6:14 और 15 में 'अंधकार' शब्द का प्रयोग बिना उद्धार पाए हुए लोगों के क्षेत्र को प्रकट करता है–अधार्मिकता का क्षेत्र, शैतान का राज्य।

अंधकार के दुष्ट हाकिम

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।

हम अंधकार के हाकिमों से लड़ते हैं–जो अंधकार में राज्य करते हैं। अत: एक बार फिर अंधकार उस राज्य को प्रकट करता है जिसमें दुष्टात्माएं कार्य करती हैं। यह निश्चित रूप से रहने के लिए अच्छा वातावरण नहीं है।

ज्योति–नए नियम के अनुसार

सभी विश्वासियों के लिए यह अच्छा समाचार है कि हम अंधकार से निकाले गए और ज्योति में प्रवेश कराए गए हैं।

यीशु ही वह ज्योति है

वे लोग जो यीशु के पीछे चल रहे हैं वे अंधकार में न चलेंगे।

तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा (यूहन्ना 8:12)।

मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे (यूहन्ना 12:46)।

प्रभु यीशु का राज्य

ज्योति प्रभु यीशु के राज्य को प्रकट करती है।

उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है (कुलुस्सियों 1:13)।

दिन की सन्तान

क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:5)।

परमेश्वर ज्योति है और उसमें कोई अंधकार नहीं है। अत: 'ज्योति' शब्द नए नियम में उस राज्य की ओर संकेत करता है जहाँ परमेश्वर रहता है।

जो समाचार हम ने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है : और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते (1 यूहन्ना 1:5,6)।

क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो (इफिसियों 5:8,11)।

हम एक समय अंधकार में थे परन्तु अब प्रभु की ज्योति में हैं। अत: अब हमें अंधकार के निष्फल कामों में सम्मिलित नहीं होना चाहिए।

इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों 12:1,2)।

सन्देश बाइबल (मैसेज बाइबल) इसी पद को ऐसे प्रकट करती है, ''आप अपनी संस्कृति में इतने भली प्रकार समायोजित न हो जाएं कि आप इसमें बिना सोचे समझे समा जाए'' (रोमियों 12:2अ)

सदृश्य =आकार लेना, तरीका, दूसरों के जैसे प्रकट करना

यही किसी भी आदत, तरीका, पोषाक, जीवनचर्या को प्रकट करता जिसे संसार ने अपनाया है।

युग (यूनानी में) आयोन (Aion) = युग अथवा लोगों के वंश

बदलना=दूसरा आकार पहन लेना

विश्वासी होने के कारण हमारे रहने के तरीके में वास्तविक और मौलिक भिन्नता होना आवश्यक है। पहले हम अंधकार थे परन्तु अब प्रभु की ज्योति में हैं अत: हमें ज्योति की सन्तान की तरह चलना चाहिए। 'चलना' शब्द का अर्थ केवल पग बढ़ाने से ही नहीं है यह हमारे सम्पूर्ण जीवन–अस्तित्व से तात्पर्य रखता है कि हमारे जीवन का तरीका, हमारा व्यवहार, संक्षेप में हमारे जीवन का सब कुछ–उनके नमूने पर होना चाहिए जो ज्योति में रहते हैं न कि उन पर जो अंधकार में रहते हैं। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति के पीछे चलते हैं जो ज्योति में है, तब हम अंधकार में चलने वालों के विपरीत रहेंगे। क्योंकि संसार अंधकार है और हम ज्योति हैं, हम उन्हें अजीब व्यक्ति लग सकते हैं। हम उनके समक्ष बाहरी लोग लग सकते हैं और वह हमें नहीं समझ सकते हैं। क्यों? क्योंकि हम ज्योति हैं! हम तो उनके जो अंधकार में हैं, बिल्कुल विपरीत हैं।

बाइबल हमें आदेशित करती है कि हम ज्योति की सन्तान की तरह चलें। अत: हम अंधकार के लोगों से विपरीत भिन्न दिशा में जाएंगे। हम भिन्न हैं। हमें अंधकार के निष्फल कामों में भागीदार नहीं होना चाहिए बल्कि उनका बहिष्कार करना चाहिए। क्योंकि हम ज्योति के लोग हैं हमें ज्योति के अनुसार चलना है। हमें उनके साथ कोई संगति और सहभागिता नहीं करनी चाहिए जो अंधकार में हैं। जब हम "संगति" शब्द की बात करते हैं तो एक ही नाव में दो व्यक्तियों के विषय में कल्पना कर सकते हैं। बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हम "संसार की नाव" में न चढ़ें क्योंकि हमारी उनसे कोई सहभागिता नहीं है जो अंधकार में हैं। बल्कि हमें उनका बहिष्कार करना चाहिए। हमें अपनी नाव में ही बैठ कर चलना चाहिए–ज्योति की नाव। संसार अंधकार की नाव में जा रहा है परन्तु हम उनके साथ कूदकर उसमें नहीं चढ़ सकते हैं। हम अंधकार के कामों के साथ कोई संगति नहीं रख सकते हैं–वे कार्य जो अंधकार के हैं। हम उनके कामों में शामिल नहीं हो सकते जो वे करते हैं क्योंकि हम ज्योति हैं।

परमेश्वर का वचन हमसे कहता है कि हम संसार के अनुरूप न बनें बल्कि बदलते जाएं। जैसा पहले बताया गया है कि "बदलना" यूनानी भाषा के 'मेटामोरफोस" शब्द से आया है। यह झिनगा और तितली में

भिन्नता के समान है। इसी प्रकार से हमें भी विभिन्न नमूने, व्यवहार और विचारों का नमूना अपनाना चाहिए। हमें इस संसार के सदृश्य नहीं बनाना है- इसका तरीका, दिखावा, आदतें, रीतियाँ, जीवनचर्या और व्यवहार का पीछा नहीं करना चाहिए।

जब हम बदल जाते हैं, हम वास्तव में संसार से बिल्कुल भिन्न हो जाते हैं। अत: आप और मैं इस संसार के सदृश्य नहीं बने रह सकते हैं, परमेश्वर ने हमें बदलने के लिए बुलाया; संसार से भिन्न रहने के लिए।

परमेश्वर का वचन हमसे कहता है कि
हम संसार के सदृश्य न बनें, परन्तु बदलते जाएं।

2

परमेश्वर का वचन बनाम संसार की संस्कृति

परमेश्वर के वचन का अधिकार हमारी संस्कृति जिसमें हम रहते हैं उससे कहीं बड़ा है।

हमें यह समझना आवश्यक है कि जिस संस्कृति में हम रहते हैं वह ज्योति की अपेक्षा अंधकार से अधिक प्रभावित है। हम संसार की संस्कृति के अनुसार नहीं परन्तु ज्योति की संस्कृति के अनुसार जीवित रहते हैं—उस राज्य की संस्कृति जिसके हम एक भाग हैं। इस ''राज्य की संस्कृति'' हमारे लिए परमेश्वर के वचन में वर्णित की गई है। जो कुछ संसार की संस्कृति में ग्रहणयोग्य है वह परमेश्वर के लिखित वचन के प्रतिकूल हो सकती है। परन्तु परमेश्वर हम से आशा करता है कि हम उसके वचन का पालन करें। जब हम सब एक होकर ज्योति में रहते हैं तब हम भिन्न लोग होते हैं। हम पवित्र लोग बनाए जाएंगे। हम उसके अपने विशेष लोग होंगे जो उसकी जिसने हमें अंधकार से अपनी ज्योति में बुलाया है, की प्रशंसा फैलाएंगे।

आप अपनी संस्कृति में इतने भली प्रकार समायोजित न हो जाएं कि आप इसमें बिना सोचे समझे समा जाएं'' (रोमियों 12:2अ, मैसेज बाइबल)।

हम में शायद् कुछ लोग ऐसे काम इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे हमारे संस्कृति के भाग हैं जिसमें हम रहते हैं। ठीक है, बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हम बिना सोचे समझे उसमें लीन न हो जाएं। यह इसलिए है कि जो परमेश्वर का वचन कहता है वह उस संस्कृति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें हम रहते हैं। यदि संसार की संस्कृति में कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के वचन का विरोध करता है तब हमारा केवल एक ही चुनाव परमेश्वर के वचन का पालन करना होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का वचन हमारा संस्कृति से ऊपर है। इसी लिए बाइबल हमें निर्देशित करती है। ''इस संसार के सदृश्य न बनो'' (रोमियों 12:2अ)।

युग के लिए यूनानी शब्द 'आयोन' आया है जिसका अर्थ वर्तमान समय के व्यवहार से है। अपने चारों ओर संसार की संस्कृति के सदृश्य न बनें परन्तु आप बदलते जाएं। यह परमेश्वर की आज्ञा है न कि मात्र सुझाव। आमीन!

- **बाइबल हमें चेतावनी देती है कि हम बिना सोचे समझे संस्कृति में लवलीन न हो जाएं। मैसेज बाइबल कहती है, "आप अपनी संस्कृति में इतने भली प्रकार समायोजित न हो जाएं कि आप इसमें बिना सोचे समझे समा जाएं" (रोमियों 12:2अ)।**
- **परमेश्वर का वचन उस संस्कृति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें हम रहते हैं। यदि संसार की संस्कृति में कुछ ऐसा है जो परमेश्वर के वचन का विरोध करता है तब हमारा केवल एक ही चुनाव परमेश्वर के वचन का पालन करना होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का वचन हमारा संस्कृति से ऊपर है।**

3

हम भिन्न हैं

कम से कम दो क्षेत्रों में आप और मैं संसार से भिन्न हैं।

हम सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित हैं

संसार सच्चाई और ईमानदारी की चिन्ता नहीं करता क्योंकि वह अंधकार में है। परन्तु, चूंकि बाइबल कहती है कि हम ज्योति के लोग हैं हमें, ज्योति की सन्तानों की नाईं चलना है, सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित होकर।

पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो। तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है। हे प्रियो मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि तुम अपने आपको परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-चलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें (1 पतरस 2:9-12)।

हमें उसकी प्रशंसा को प्रकट करना है जिसने हमें अंधकार से निकाल कर दिव्य ज्योति में प्रवेश कराया है। विश्वासी होने के कारण, हमें "अन्यजातियों"-बिना उद्धार पाए हुए लोगों के समक्ष आदर और ईमानदारी के साथ चलने के लिए बुलाया गया है। अत: ज्योति की सन्तान की तरह हमें सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है। जब लोग हमें देखें तो वे पता कर लें कि हम भिन्न लोग हैं क्योंकि हम सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित हैं।

विद्यार्थियों हेतु

उदाहरण के लिए यह कल्पना करें कि आप विद्यालय या कॉलेज में परीक्षा दे रहे हैं और परीक्षक चाय पीने बाहर गया है और सब लोग नकल कर रहे हैं। आपके पास जो विद्यार्थी वैठा है वह आपसे नकल करने के लिए कहता है। परन्तु आपको नकल करने से इनकार करना चाहिए, इसलिए नहीं कि परीक्षक कभी भी वापस आ सकता है, परन्तु इसलिए कि आप जानते हैं कि आप ज्योति की सन्तान हैं।

जब आप अपना गृह कार्य करते हैं तो इसे अपने साथी से न कराएं और यह बहाना न बनाएं कि आपने ही इसे किया है। क्यों? क्योंकि आप सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित हैं।

व्यवसायियों हेतु

व्यवसायी होते हुए आपको अपने जीवनों में सच्चाई कायम रखना चाहिए। आप न केवल व्यवसायी हैं परन्तु आप ज्योति की सन्तान हैं और आप उस व्यवसायी से भिन्न हैं जो अंधकार की सन्तान हैं। आप दोनों एक जैसा ही व्यवसाय करते होंगे, परन्तु आप दोनों पूरी तरह से भिन्न लोग हैं। और इसलिए कि आप सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित हैं। आप नौकरी के लिए बनाए गए बायोडाटा में झूठ नहीं लिखेंगे।

जब मैंने सबसे पहली नौकरी के लिए आवेदन किया, क्योंकि उस समय तक मैंने अनुसन्धान करने हेतु सारा समय विश्वविद्यालय में बिताया था। जब समय आया कि मैं विश्वविद्यालय से बाहर नौकरी करूँ तो मैंने यही किया जो सब लोग करते हैं। मैंने अपना रेजूमे (बायोडाटा) नौकरी दिलाने वाली एजेन्सी को दिया। मेरे मित्र ने इस एजेन्सी से मेरा परिचय कराया जो न्यू जर्सी में भारतीय लोगों द्वारा चलाई जाती थी। अत: मैंने अपना बायोडाटा उन्हें दिया इस आशा से कि आसानी से अच्छी नौकरी मिल जाएगी। जैसा उन्होंने वायदा किया था। बाद में उन्होंने मुझे फोन करके बताया कि मेरे बायोडाटा में परिवर्तन किया है और एक ही रात में मुझे उन कम्पनियों में दो-तीन वर्ष का अनुभव हो गया जिनके बारे में मैंने कभी सुना भी नहीं था। यहाँ मुझे चुनाव करना था-या तो मैं ज्योति की

सन्तान बनकर भिन्न बन जाता अथवा अंधकार की सन्तान बनकर झूठ बोलता। मैंने उस एजेन्सी से यह कहकर सम्बन्ध समाप्त कर लिया कि उनके बनाए गए बायोडाटा को मैं प्रयोग नहीं कर सकता हूँ। मेरा एक पृष्ठ का ही साधारण रेजूमे (बायोडाटा) था, बस इतना ही। तब मैंने इसे सीधे भेजा यह विश्वास करते हुए कि परमेश्वर मुझे अच्छी कम्पनी में नौकरी देगा, जहाँ मैं इस उद्योग से सम्बधित सर्वोत्तम बातें सीख सकूँगा। और परमेश्वर ने ऐसा ही किया। मुझे अपने बायेडाटा में झूठ नहीं बोलना पड़ा और न ही बनावटी बातें लिखनी पड़ीं।

एक बार अपनी संस्था के लिए लोगों का साक्षात्कार लेते हुए एक जवान व्यक्ति से मुलाकात हुई जिसने हमारे तकनीकी टेस्ट में अच्छा किया, और वह मुझसे बात करने साक्षात्कार के अन्तिम पारी में आया।

जब मैंने उससे पूछा कि उसने अब तक किसके लिए काम किया है, तब उसने एक कम्पनी का नाम बताया और उसकी वैबसाइट का पता भी मुझे दिया। परन्तु जब मैंने उस वैबसाइट को देखा तो वह कम्पनी सर्च इंजन की कम्पनी थी ना की कम्पयूटर के विकास की कम्पनी। जब मैंने पुनः उससे पूछा तो उसने बताया कि हो सकता है कि कम्पनी ने अपना वैबसाइट बदल दिया हो। परन्तु जब मैंने कम्पनी का फोन नम्बर मांगा तो उसने कहा कि मैंने सिमकार्ड बदल दिया है और इस लिए उनका नम्बर नहीं है। तब मैंने उससे कोई लैंडलाइन टेलीफोन नम्बर मांगा उसने कहा वह मुझे नहीं मालूम। मैंने उससे कहा कि यह कैसे हो सकता है कि उसने उस कम्पनी में एक वर्ष काम किया है और फिर भी उनका लैंडलाइन नम्बर याद नहीं है जबकि अधिकांश कम्पनियों में काम करने वाले कुछ ही दिनों अपने कार्यालयों का नम्बर याद कर लेते हैं। तब उस जवान व्यक्ति ने अन्त में मान लिया कि उसने अपने बायोडाटा में काम के अनुभव के बारे में झूठ लिखा था।

ऐसी ही एक घटना एक मसीही सम्मेलन में हुई जहाँ मैं तीन दिन के लिए दूसरे शहर में प्रचार कर रहा था। सत्रों के दौरान मेरा परिचय एक जवान व्यक्ति से कराया गया जो हाल ही में बंगलौर में आया था और सोफ्टवेयर के एक विशेष क्षेत्र में नौकरी ढूंढ़ रहा था। मैंने उसका

नाम, शैक्षिक योग्यता और पृष्ठभूमि पूछी। उसने उत्तर दिया कि उसने ''तीन महीने का प्रशिक्षण लिया है परन्तु वह पांच वर्ष के अनुभव पर जा रहा था।'' मै उसकी बात ठीक से समझना चाहता था इसलिए मैंने कहा कि जब हम बंगलौर वापस पहुँचेंगे तब बात करेंगे। बाद में वह मुझसे मिला और मुझे बताया कि वह पिछले दो वर्षों से एक पास्टर के साथ सेवा कर रहा था। थोड़े दिनों के बाद उसे महसूस हुआ कि उसे नौकरी की आवश्यकता है। तब उसने तीन महीने का व्यवसायिक प्रशिक्षण लिया। उस प्रशिक्षण के बाद उसने अपना बायोडाटा बनाया जिसमें उसने लिखा था कि उसे पाँच वर्षों के कार्य का अनुभव है जबकि उसने वास्तव में जो लिखा था ऐसा नहीं था। उसने बताया कि मैं आपको सत्य इसलिए बता रहा हूँ कि आप एक पास्टर हैं। मुझे नहीं मालूम था कि उसका जवाब कैसे दिया जाए परन्तु मैं प्रसन्न था कि कम से कम उसने मुझे सच बता दिया। तौभी मैं दुखी था कि एक व्यक्ति जो कलीसिया की पूर्णकालिक सेवा में दो वर्षों तक रहा वह केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए झूठ बोलता है।

बाइबल कहती है कि हमें ज्योति की सन्तान की तरह चलना है जिसका अर्थ कि व्यवसायी होते हुए भी हमारी सच्चाई के साथ कोई समझौता नहीं। एक मसीही व्यवसायी और पेशेवर होने के कारण हमें कार्यालय की सुविधा और का दुर्पोयोग नहीं करना चाहिए, बाइबल भी ऐसा ही कहती है।

दासों को समझा, कि अपने अपने स्वामी के आधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें। चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर के उपदेश को शोभा दें (तीतुस 2:9,10)।

सेवकों को–शर्तों पर नौकरी करने वालों को उत्साहित करो–कि वे अपने अपने स्वामियों के प्रति आज्ञाकारी रहें। कार्यकर्त्ताओं को हर बात में अपने स्वामियों को प्रसन्न करना चाहिए न कि उनके साथ कठोरता बरतनी चाहिए। यह बाइबल पर आधारित प्रबन्धन का सिद्धान्त है! कार्यकर्ताओं को उन्हें चिढ़ाना अथवा बुराई नहीं करनी चाहिए और एक

अच्छा आदर करना चाहिए ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो। अत: एक मसीही कार्यकर्त्ता के रूप में, चाहे अन्य सब लोग गलत कर रहे हों, आप उसके सदृश्य नहीं करेंगे। आपको भिन्न बनना है। शायद यह आपके कार्यालय का बिना लिखित सिद्धान्त हो कि वेतन के अतिरिक्त कार्यकर्ता वह सब कुछ लेते हों जो वे चाहते हैं। परन्तु क्योंकि आप ज्योति की सन्तान हैं और अंधकार से ज्योति में चलने के लिए बुलाए गए हैं; एक कार्यकर्त्ता के रूप में आपको केवल वही लेना है जो आपने परिश्रम करके कमाया है।

इस हठी और दुष्ट पीढ़ी के मध्य आप कैसे अपने आप को प्रकट करेंगे कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं? बाइबल हमें आदेश देती है कि हम एक सच्चाई का जीवन जीएं और सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना शिकायत के करें ताकि हम इस हठी और दुष्ट पीढ़ी को दिखा सकें कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो। ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते हो (फिलिप्पियों 2:14,15)।

यदि हमारे सहकर्मी कार्यालय में कुड़कुड़ाते और शिकायतें करते हैं और हम भी उनमें शामिल हो जाते हैं तब उनमें और हममें क्या अन्तर रह जाता है? हमें प्रत्येक काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना शिकायत के करके यह प्रकट करना है कि हम ज्योति की सन्तान हैं। आमीन!

हममें से वे लोग जो स्वामी हैं और व्यापार चलाते हैं और अपने कार्यकर्त्ताओं के वेतन के लिए फैसला करते हैं, बाइबल हमें बताती है कि हम लोगों के साथ अत्याचार न करें और उनका वेतन न रोकें।

एक दूसरे पर अन्धेर न करना, और न एक दूसरे को लूट लेना। और मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात बिहान तक न रहने पाए (लैव्यव्यवस्था 19:13)।

यदि आपके पास लोग हैं जो आपके लिए काम करते हैं; तो आप

उनका वेतन समय पर देने का निश्चय करें। आप कह सकते हैं कि यह तो ''भारतीय कम्पनी की संस्कृति'' है और उनका वेतन रोक सकते हैं। परन्तु सुनिए, हम इस संस्कृति से सम्बन्ध नहीं रखते हैं परन्तु परमेश्वर के राज्य की संस्कृति से सम्बन्ध रखते हैं। और परमेश्वर कहता है कि हमें उस व्यक्ति की जिसने हमारे लिए काम किया है, का वेतन नहीं रोकना चाहिए। यदि कार्यकर्ता ने काम किया है तो उसका वेतन दीजिए।

उस पर हाय जो अपने घर को अधर्म से और अपनी उपरौठी कोठरियों को अन्याय से बनवाता है; जो अपने पड़ोसी से बेगारी में काम कराता है और उसकी मज़दूरी नहीं देता (यिर्मयाह 22:13)।

अपने पड़ोसियों की सेवाओं का उपयोग बिना पारिश्रमिक दिये न करें। घरेलू महिलाएं, यदि आपके पास घर में काम करने वाली सहायिकाएं हैं तो उन्हें समय पर वेतन दीजिए। भिन्न बनें।

जब मैं लोगों का साक्षात्कार लेता हूँ तो मैं उनसे पूछता हूँ कि वे अपनी वर्तमान नौकरी क्यों छोड़ रहे हैं। उनमें से कुछ ने मुझे बताया कि पिछले छ: माह से उन्हें वेतन नहीं किया गया है। ये वे बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हैं जिनमें 700 लोग काम करते हैं। परमेश्वर इस प्रकार के काम की संस्कृति पसन्द नहीं करता है!

बैंगलौर में एक ठेकेदार ने एक बड़ी सोफ्टवेयर कम्पनी के लिए विशाल छत का निर्माण किया और उसमें लाखों रुपया लगाया तौभी कम्पनी के स्वामी ने पिछले दो वर्षों से उसका भुगतान नहीं किया है। ज्योति की सन्तान और स्वामी होने के कारण हमें जीवन के हर क्षेत्र में सच्चाई और ईमानदारी कायम रखना है, अपनी भाषा और व्यवहार में भी।

और हे स्वामियो, तुम भी धमकियां छोड़कर उनके साथ वैसा ही व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष नहीं करता (इफिसियों 6:9)।

एक बार मैं एक व्यक्ति से मिल रहा था। उसने मुझे कॉफी दी। एक और व्यक्ति हमारे साथ था। उसने कॉफी लेने से यह कहते हुए इन्कार

किया कि वह अभी अभी नाश्ता करके आया है। जब मैंने कॉफी देने वाले व्यक्ति से कहा कि वह भी जलपान में भाग ले, उसने उत्तर दिया कि वह उपवास में है! तभी उस व्यक्ति ने, जो मेरे साथ था, मेज़वान को प्रभावित करने के लिए तुरन्त कहा कि वह भी उपवास में था। तब मुझे ताज्जुब हुआ कि हम मसीहियों के मध्य ''सच्चाई'' को क्या हो गया है। क्या हमें संसार से भिन्न नहीं होना चाहिए? क्या हमें ज्योति की सन्तान नहीं होना चाहिए? क्या हमें संसार से भिन्न और बदले हुए नहीं होना चाहिए, और परमेश्वर के मार्गों और विचारों के अनुसार नहीं जीना चाहिए?

हम शुद्धता और मर्यादा के प्रति समर्पित हैं

उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।'' (1 पतरस 2:11ब)

शारीरिक अभिलाषाओं से दूर रहें। उस परमेश्वर के लोग होने के नाते जिसकी हम स्तुति करते हैं जिसने हमें अंधकार से निकालकर अपनी दिव्य ज्योति में प्रवेश कराया है हमें शारीरिक अभिलाषाओं से दूर रहना चाहिए। हमें शुद्धता और मर्यादा के प्रति समर्पित होना है।

ज्योति की सन्तान की तरह जीवन जीएं, सच्चाई और ईमानदारी के प्रति समर्पित होते हुए हम हर काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना शिकायत के करें ताकि हम इस हठी और दुष्ट पीढ़ी के समक्ष अपने आपको परमेश्वर की सन्तान प्रकट कर सकें।

जवान महिलाएं

रिबका सेन्ट जेम्स एक अच्छा उदाहरण है जो जवान महिला है जो मसीही रौक कलाकार कहलाती है। वह बहुत से मसीही गाने गाती है जिन्हें नवयुवक सुनते हैं। एमी गुडमैन के साथ साक्षात्कार में जो फैमिली लाफ डॉट कॉम के लिए था, उसने ''मर्यादा के प्रति समपर्ण'' के विषय पर बोला। उस आकाशवाणी के कुछ निष्कर्ष यहाँ दिये गये है:

रिबका कहती है, "मैं मानती हूँ कि मैंने अपने स्वयं का भाव आकर्षण के लिए बनाया है। क्योंकि मैं जानती हूँ कि जिस पोशाक को मैं पहनती हूँ उसके द्वारा विशेष प्रकार का लड़का मेरे पास आता है। और तब अन्त में जो लड़का मेरे पास आता है जिसे मैं पति बनाना चाहूँगी, वह शुद्धता हेतु समर्पित होता है। वह अभिलाषा नहीं चाहता है। परन्तु यदि मैं भयानक रूप से कपड़े पहनूँ तो मैं एक ऐसे लड़के को आकर्षित करती हूँ जो इस प्रकार के कपड़ों से खुश होगा जिससे लगभग यह तय होगा कि वह अशुद्ध है परन्तु वह उसके लिए ठीक है। परन्तु यदि मैं मर्यादापूर्ण कपड़े पहनूँ तब वह ऐसे लड़के को आकर्षित करेगी जो उस पोशाक का आदर करता है और उसकी सराहना करता है। अत: मैं ऐसे कपड़े पहनना चाहूँगी।

मैं ऐसे कपड़े पहनना चाहूँगी जो भीरू, ठण्डे, और आधुनिक हैं और ऐसी वस्तुएं जो मर्यादापूर्ण हैं और जिसमें अधिक देह नहीं दिखती और अधिक तंग नहीं है। परन्तु ऐसे कपड़े पहनना अत्यन्त कठिन है। परन्तु यह एक उपयुक्त युद्ध है क्योंकि मैं मर्यादापूर्ण रहने में विश्वास करती हूँ और जवान महिलाओं को गलत रास्ते पर नहीं ले जाना चाहती हूँ और न ही अपने मसीही भाइयों को भी लड़खड़ाने और अभिलाषाओं में डालना चाहती हूँ।

कई बार मेरे पिता, जब मैं कुछ ऐसे कपड़े पहनती हूँ जो कभी कभी थोड़े अटपटे होते हैं वे कहते हैं, "ओह यह तो लड़कों को आकर्षित करने वाली पोशाक है।" अत: वह ऐसा करके मुझे चिड़ाते हैं, परन्तु यह कुछ ऐसा है जिससे उन्हें समस्या होती है तो वे मुझे साफ कह देते हैं। कभी कभी मेरे पिता जी ऐसा कहते हैं, कि यह छोटी पुत्री का प्रभाव है, तो मुझे लगता है कि इससे उन्हें अधिक तकलीफ होती है उन कपड़ों से जो मैं पहनती हूँ। मेरी माता जी उन्हें सन्तुलित करतीं हैं। अत: मैं सोचती हूँ कि उन दोनों ने मेरी किशोरावस्था में मुझे सन्तुलित रहना सिखाया है। यदि यह केवल मेरे पिता जी ही होते तो शायद एक तरफ की ही गलती होती, विशेषकर नियम बदलने के विरोधी, विशेषकर मेरी माँ ने मुझे उत्साहित किया कि जैसे वह कपड़े पहनतीं हैं वैसे ही मैं भी पहनूँ। वह ऐसे कपड़े पहनतीं हैं जिसमें कम त्वचा दिखती है, ऐसे कपड़े नहीं पहनतीं

जो बहुत छोटे, और तंग होते हैं। यह कुछ ऐसा है कि मैं अपने अन्दर यह जानती हूँ कि उनका अनुसरण करना ठीक है। मैं भी उनकी तरह रहना चाहती थी। मैं कुछ ऐसा नहीं करना चाहती जिससे मेरे माता पिता अप्रसन्न हों और मैं ऐसा भी कुछ नहीं करना चाहती जिससे परमेश्वर अप्रसन्न हो अथवा दूसरों को चोट पहुँचे। अत: मैं सोचती हूँ कि मेरी जिम्मेदारी है, एक मसीही होने के नाते, कि मैं वही करूँ जो ठीक है!

यह रुचिकर था कि जब मैंने संगीत में कदम रखा तो उस समय कोट 'अन्दर' की बात थी क्योंकि वह ठीक था और आप कोट पहनकर वास्तव में मर्यादित व्यक्ति लगते हैं। इस समय कोट उतने ठण्डे नहीं होते हैं। आप जानते हैं कि उत्तेजित कपड़े, बहुत समय इनमें बहुत सी देह के भाग दिखते रहते हैं, ये सब ऐसी चीजें हैं जो आप टी.वी. पर देखते हैं और आप दुकानों पर कुछ मर्यादापूर्ण कपड़े ढूँढ़ते रहते हैं। परन्तु यह ढूँढ़ना कठिन होता है!

मंच पर और मंच से नीचे पहनने के मेरे कुछ नियम हैं। एक बात के लिए मैं बहुत सजग हूँ वह यह है कि मैं पैण्ट पहनना चाहती हूँ, विशेशकर मंच पर, इसमें चलने फिरने में आसानी होती है, आप जानते हैं कि स्कर्ट में कठिनाई होती है, विशेषकर जब मैं रौक संगीत गाती हूँ। मैं यह भी निश्चय करती हूँ कि जो मैं पहनती हूँ वह बहुत तंग न हो, ऐसा न हो कि मेरे शरीर की हर मुड़न दिखे। यहाँ तक कि जो टॉप मैं पहने हुए हूँ यदि मैं इसे ऐसे ही पहनती जैसा वह है यह बहुत अधिक तंग होता, परन्तु मैं नीचे दो शर्ट पहने हुए हूँ ताकि यह बिल्कुल फिट न लगे। इससे कोई भी लड़का बुरी नज़र से देखने हेतु मजबूर होगा। ऐसा होता है और कुछ वर्षों पहले हमारी कलीसिया में एक मेहमान वक्ता आई थी जिसने हमारे युवा वर्ग को सम्बोधित किया था और उसने कहा, ''इस युवा संगठन में कुछ लड़के मेरे पास आए और उन्होंने यह शिकायत की कि उनको नहीं मालूम कि वे किधर देखें। देखिए वे परमेश्वर की आराधना करने और उसकी निकटता में बढ़ने के लिए आए थे, और वे ऐसी लड़कियों को देख रहे हैं जो बहुत तंग कपड़े बहुत कम कपड़े पहने हुई थीं और उन्हें बिल्कुल नहीं मालूम हो रहा था कि किधर देखें। अत: यह उनका

ध्यान बटाने वाली घटना थी। मर्यादा एक अच्छी कुंजी है। परन्तु बहुत सी लड़कियाँ अपने कपड़ों के पहनावे की सामर्थ नहीं समझती और यह भी नहीं कि प्रभु में एक भाई के ऊपर, लड़कों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।"

आइए इस खण्ड में से हम मुख्य बात पर ध्यान दें। रिबका कहती है कि विशेष प्रकार की पोशाक के द्वारा वह विशेष लड़के को आकर्षित करती है। जवान महिलाओं, यदि आप दूसरों को प्रलोभन में डालने वाले वस्त्र पहनती हैं, तब आप उस प्रकार के लड़कों को आमन्त्रित करती हैं। क्या आप चाहती हैं कि उस प्रकार का व्यक्ति आपका पति बने? आपमें से कुछ को तो अभी भी निश्चय नहीं है। रिबका ने जो कहा वह महत्वपूर्ण है! यदि कोई बेहतर और शुद्ध पोशाक पहनना चाहता है तो वह है रिबका सेन्ट जेम्स। वह तो मंच पर हजारों लोगों के लिए गाती है, बहुत से एलबम बनाती है। मुझे निश्चय है कि वह अच्छे एवं मर्यादापूर्ण पोशाक पहनना चाहती है ताकि बड़ी भीड़ को आकर्षित कर सके। बल्कि वह कहती है, "जिस प्रकार की पोशाक मैं पहनती हूँ वह इतनी महत्वपूर्ण है कि मैं उसमें मर्यादापूर्ण दिखना चाहती हूँ क्योंकि मैं अन्य जवान लड़कियों को गुमराह नहीं करना चाहती हूँ। और मैं प्रभु में अपने भाइयों को अभिलाषाओं में गिराना नहीं चाहती हूँ।" यह एक जवान प्रसिद्ध लड़की है जो मर्यादा के प्रति समर्पित है और उसने मसीही होने का सिद्धान्त बिल्कुल साफ बनाया है।

जवान महिलाओं, आपको इस संसार की अन्य महिलाओं से भिन्न होकर शुद्धता और मर्यादा के प्रति समर्पित होना है। शायद इससे आपको अपने मित्रों के बीच लज्जित महसूस करना पड़े परन्तु बाइबल कहती है कि यह तो अन्तर्रात्मा की सुन्दरता है जिसे परमेश्वर ढूँढ़ता है।

और तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति भांति के कपड़े पहिनना। बरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है (1 पतरस 3:3-4)।

क्या आप परमेश्वर की दृष्टि में सुन्दर दिखना चाहती हैं अथवा मनुष्य की दृष्टि में? अपना चुनाव करें!

सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें। वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आपको संवारे; न कि बाल गूंथने, और सोने, और मोतियों, और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है। (1 तीमुथियुस 2:8-10)

पौलुस एक प्रार्थना सभा के तरीके की चर्चा करता है जहाँ पुरुष अपने पवित्र हाथों को उठाकर स्वर्ग की ओर देखते हुए प्रार्थना करे और अचानक इस बात को बदलता हुआ कहता है, ''इसी प्रकार स्त्रियाँ भी अपने आपको सुहावने वस्त्रों से संवारे।'' पौलुस क्यों महिलाओं के वस्त्रों के विषय बात करता है? मुझे लगता है कि उस समय भी ऐसी ही समस्या होगी जैसी आज है। पुरुष बहुत कोशिश कर रहे हैं कि वे अपने पवित्र हाथों को उठाकर परमेश्वर की ओर देखें परन्तु कोई चीज़ है जो उनका ध्यान आकर्षित कर रही है और उन्हें नीचे खींच रही है। इसीलिए पौलुस उन महिलाओं को जो प्रार्थना कर रही हैं, आदेश देता है कि वे अपने आपको सुहावने वस्त्रों से, और संकोच और संयम के साथ संवारें। न कि बाल गूंथने, न सोने और मोतियों से अथवा महंगे कपड़ों से, परन्तु भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करने वाली स्त्रियों को यही उचित भी है। जवान स्त्रियो, ऐसे सुहावने वस्त्र पहनें जिससे आदर प्रकट हो, जो उचित हो और यह प्रकट कर सके कि आप आत्म-संयमी हैं। वह स्तर जो पौलुस ने मसीही महिलाओं के लिए निर्धारित किया है वह यह है कि जिससे उनकी भक्ति प्रकट हो। आमीन!

आप अपनी पोशाक का चुनाव कैसे करते हैं? इन बातों पर विचार करें। क्या इससे भक्ति प्रकट होती है? क्या यह परमेश्वर की समानता प्रकट करती है? क्या यह ईश्वर-भक्ति प्रकट करती है? क्या यह परमेश्वर के प्रति समर्पण को प्रकट करती है? ये बातें ही आपके कपड़ों को चुनाव करने में निर्णायक होती हैं।

जवान स्त्रियो ऐसे सुहावने वस्त्र पहनें जिससे आदर प्रकट हो, जो उचित हो और यह प्रकट कर सके कि आप आत्म-संयमी हैं। वह स्तर जो पौलुस ने मसीही महिलाओं के लिए निर्धारित किया है वह यह है कि जिससे उनकी भक्ति प्रकट हो।

माता पिता

इस प्रभाव पर ध्यान दें जो रिबका के माता पिता का उसके जीवन पर था। वह एक प्रसिद्ध महिला है। लेकिन फिर भी उसके माता पिता का प्रभाव उसके चाल-ढाल व रहने के तरीके पर है। माता पिता, आपको अपने बच्चों से जो जवानी की सीढ़ी पर हैं, बात करने की आवश्यकता है। ऐसा कहकर अपनी जिम्मेदारी से बचने का प्रयास न करें कि हम उन्हें कलीसिया में भेजेंगे शायद पास्टर पुलपिट से इन विषयों पर बात करेंगे।

वृद्ध महिलाएं

ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें। और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली और अपने अपने पति के आधीन रहनेवाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए (तीतुस 2:4,5)।

पौलुस वृद्ध महिलाओं से कहता है कि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी दें कि वे ''संयमी और पतिव्रता'' हों, इसका अर्थ है कि वे शालीन, गुणी, साफ, निर्दोष और पवित्र हों। यह परमेश्वर का स्तर है।

जवान स्त्रियाँ तर्क कर सकती हैं कि जब सब कोई उनकी मित्र भी ऐसे वस्त्र पहनती हैं जिससे उनके अंग प्रकट होते हैं तो वे ही क्यों सुहावने वस्त्र पहनें। वे यह भी सोच सकती हैं कि उनके पहनावे से पुरुषों को तकलीफ है तो यह उनकी ही समस्या है। परन्तु ऐसा नहीं है। जवान

स्त्रियों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि जिस तरह की पोशाक वे पहनती हैं उसी के अनुसार वे लड़कों को आकर्षित करेंगी। अत: यह उनकी भी समस्या बन जाएगी। महिलाओं को ऐसी पोशाक नहीं पहननी चाहिए जिससे कोई प्रलोभन में पड़ जाए। उन्हें ऐसी पोशाक पहननी चाहिए जो शालीन और सुहावनी हो जिससे भक्ति प्रकट हो, क्योंकि वे ज्योति की पुत्रियाँ हैं। परमेश्वर का वचन हम सब को बताता है कि हम किसी के लिए ठोकर का कारण न बनें और यही वृद्ध महिलाओं को चाहिए कि वे जवान स्त्रियों को सिखाएं।

जवान पुरुष

क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो। और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने। और यह काम अभिलाषा से नहीं, और न उन जातियों की नाईं, जो परमेश्वर को नहीं जानतीं (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-5)।

परमेश्वर ने हमें व्यभिचार के लिए नहीं परन्तु पवित्रता के लिए बुलाया है। "क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो" तुम परमेश्वर के लिए अलग किए गए हो। सबसे बड़ी चुनौती जिसका जवान पुरुष सामना करते हैं वह है, आँखों की अभिलाषा।

प्रत्येक बुराई से बचे रहो (1 थिस्सलुनीकियों 5:22)।

सब प्रकार की बुराई से दूर रहो। उदाहरण के लिए, बंगलौर की सड़कों पर कार चलाना बड़ा कठिन है। कार में स्तुति आराधना के गति बज रहे हैं ताकि आपको आत्मिक वातावरण मिले और आप परमेश्वर से बात कर सकें, परन्तु जब आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं तो आप कार के एक तरफ देखते हैं कि वहाँ बहुत बड़ा पोस्टर लगा है जिसमें एक महिला बहुत कम कपड़ों में कार के साथ खड़ी है। आप चकरा जाते हैं कि वे महिला बेच रहे हैं अथवा कार। और फिर भी आप अपनी आँखें बन्द करने की हिम्मत नहीं कर रहे हैं कि कहीं सामने वाली बस में टक्कर न लग जाए।

यहाँ तक कि जब हम सुबह समाचार पत्रों को पढ़ने के लिए खोलते हैं तो सबसे पहले हम जो देखते हैं वह मुख्य समाचार नहीं परन्तु प्रत्येक पृष्ठ पर अल्प वस्त्रों में महिलाएं! अतः हमें यह समाचार पत्र बदलकर कोई ऐसा समाचार पत्र मिले जो थोड़ा भिन्न हो। परन्तु नहीं मिलता। तब हम समाचार पत्र बन्द कर देते हैं और इन्टरनेट पर समाचार पढ़ना आरम्भ कर देते हैं। हम निर्दोषता से किसी लिंक पर चले जाते हैं परन्तु परिणाम वही रहता है जो नंगेपन का सब जगह है। अतः हम क्या करें?

उस कोरस को याद रखें जो हम सन्डे स्कूल में गाया करते थे :

खबरदार छोटी आँख क्या देखती
खबरदार छोटी आँख क्या देखती
क्योंकि तेरा बाप आसमान से नीचे देखता प्यार से
खबरदार छोटी आँख क्या देखती।

वे बातें जो सन्डे स्कूल में सिखाई जाती हैं प्रायः बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। वे बातें ऐसी लगती हैं मानो स्वभाव में भविष्यवाणी हों कि पहले से बता दें कि 50 वर्षों बाद हम किन किन समस्याओं का सामना करेंगे।

हमें अपने आप को यह बताते रहना चाहिए कि हम ज्योति की सन्तान हैं। हम प्रथम दृष्टि को नहीं रोक सकते परन्तु दूसरी बार हम इसे नज़रअन्दाज कर सकते हैं। हमें यह पता नहीं था कि वहाँ पर पोस्टर है। अतः हमने उसे देख लिया। परन्तु यदि हम उससे आगे निकल गए और बार-बार मुड़कर उसे देख रहे हैं तब यह हमारी समस्या है। हमें अपने जीवनों में पवित्रता और शालीनता के प्रति समर्पित होना चाहिए क्योंकि हम ज्योति की सन्तान हैं और इसलिए हम दूसरी दृष्टि वहाँ नहीं डालेंगे। आमीन!

- **माता पिता,** आपको अपने बच्चों से जो जवानी की सीढ़ी पर हैं, बात करने की आवश्यकता है। ऐसा कहकर अपनी जिम्मेदारी से बचने का प्रयास न करें कि हम उन्हें कलीसिया में भेजेंगे शायद पास्टर पुलपिट से इन विषयों पर बात करेंगे।
- **पौलुस वृद्ध महिलाओं से कहता है** कि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी दें कि वे ''संयमी और पतिव्रता'' हों, इसका अर्थ है

कि वे शालीन, गुणी, साफ, निर्दोष और पवित्र हों। यह परमेश्वर का स्तर है।

- परमेश्वर ने हमें व्यभिचार के लिए नहीं परन्तु पवित्रता के लिए बुलाया है। ''क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो'' **तुम परमेश्वर के लिए अलग किए गए हो।**

डेटिंग के स्तर

जवान लोग

जब आप डेटिंग पर जाते हैं तो आपसी स्पर्श का बहिष्कार करें और ऐसी जगह न जाएँ जहाँ आप ऐसा कुछ कर सकते हैं जो आप नहीं चाहते कि अन्य लोग जानें। आप दोनों अकेले एक स्थान में न जाएँ और वह भी बन्द दरवाजों के अन्दर। आप जानते हैं कि प्रत्येक शारीरिक स्पर्श में संलग्न है, परन्तु स्मरण रखें कि आप भिन्न हैं। आप अपने जीवन में पवित्रता के प्रति समर्पित हैं।

माता पिता

माता पिता को जागने की आवश्यकता है। आपको अपने जवान बच्चों से बात करना है। आप अपने पास्टर से मदद मांग सकते हैं कि वह आपके पुत्र और पुत्री से बात करे, परन्तु आप पास्टर अथवा चर्च से वह करने की आशा न करें जिसके लिए परमेश्वर ने आपको जिम्मेदार ठहराया है। जब तक बच्चे आपकी छत के नीचे रहते और आपके साथ मेज पर खाते हैं, आप संरक्षक हैं। चर्च उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाएगा, प्रयास करेगा कि वे पवित्रात्मा से भर कर मसीह में परिपक्व बनें, परन्तु माता पिता होने के नाते वे आपकी जिम्मेदारी हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आपका बेटा अपने कॉलेज से एक लड़की को घर लाता है और आपके कमरे में जाने के बजाए वे आपके बेटे के कमरे में जाते हैं और दरवाजा बन्द कर लेते हैं। आप लड़की के लिए

चाय बनाने में व्यस्त हैं, परन्तु यदि आप उन्हें अकेले कमरे में पाते हैं कृपया दरवाजा खटखटाएँ, उनको कमरे से बाहर निकालें क्योंकि आपके घर में उन्हें अकेले कमरे में रहने की इज़ाज़त नहीं है। आप कुढ़ सकते हैं कि आपका बेटा अगले दिन घर वापस नहीं आएगा, यदि आप ऐसा करेंगे। आप उसके इस व्यवहार को यह कहकर नज़रअन्दाज़ कर सकते हैं कि वह विश्वास योग्यता से कलीसिया और जवानों को सभा में भाग लेता है, बहुत धर्मी लड़का है और इसलिए अन्दर कोई गलत काम नहीं कर रहा होगा।

माता पिता याद रखें कि आपके बच्चों में हारमोन हैं। हम चर्च में लोगों को 'हर्मोन रहित' नहीं करते हैं। अत: यह सच हो सकता है कि आपके बच्चे विश्वासयोग्यता से कलीसिया में आते हों। आप घर पर उनके लिए जिम्मेदार हैं। आपको शुद्धता और मर्यादा के सिद्धान्तों को लागू करना है जिसकी मांग बाइबल हम मसीहियों से करती है। चर्च उन्हें यह बताकर कि क्या ठीक है और क्या गलत है अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करेगा। परन्तु जब आप अपने बच्चों को विपरीत लिंग के सदस्य के साथ बन्द दरवाजों के अन्दर बैठने की अनुमति देंगे तब कमजोरी के एक क्षण में ही, उनके हारमोन चर्च में सुने गए सारे उपदेशों और वे सारे प्रार्थनापूर्ण हाथ जो उनके ऊपर रखे गए थे, के ऊपर विजयी हो जाएंगे। माता पिता को अपने बच्चों के विषय में गम्भीर होने की आवश्यकता है अन्यथा आप एक दिन पछताएंगे कि आपने अपने ही घर में परमेश्वर के स्तरों को कायम नहीं किया।

विवाहित जोड़े

हम विवाहित जोड़ों को अपने जीवनों में पवित्रता के प्रति समर्पित होने की आवश्यकता है। पति और पत्नि को एक दूसरे के प्रति समर्पित होना है। हम मसीही हैं—ज्योति की सन्तान हैं। हमें अपने विवाहों में यौन पवित्रता और मर्यादा के प्रति समर्पित होना है। पति और पत्नि अपनी यौनाचार आवश्यकताएं अपने विवाह में पूरी करें। बाहर देखने से इन्कार करें। संसार में अन्य लोग अपनी यौन सन्तुष्टि हेतु बाहर देख सकते हैं परन्तु हम भिन्न हैं। बाइबल कहती है, "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की)

निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो (1 पतरस 2:9)।

आप और मैं अंधकार में से बाहर निकाले गए ताकि ज्योति की सन्तान के समान जीवन जीएं। बाइबल कहती है कि हम ज्योति हैं इसलिए हमें ज्योति की सन्तान की तरह चलना है। हमें अपने चारों ओर के संसार से भिन्न होना है। हमें अपने काम के स्थानों में और व्यवसायों में, एक कार्यकर्ता, एक मालिक, एक घरेलू महिला के रूप में उन सबसे भिन्न बनना है जो हमारे आस-पास हैं क्योंकि यही परमेश्वर हम से चाहता है। एक जवान व्यक्ति, एक जवान स्त्री, माता पिता, एक पति, एक पत्नी के रूप में हम भिन्न हैं। हम अपने जीवनों में पवित्रता के प्रति समर्पित हैं और कोई समझौता नहीं करते हैं। समझौता सदैव बन्धन की ओर ले जाता है। जिस दिन हम समझौता करना आरम्भ कर देंगे, उस दिन हम अपने कारावासों में निश्चित रूप से कैद हो जाएंगे।

डेटिंग के स्तर

- **जवान लोग,** जब आप डेटिंग पर जाते हैं तो आपसी स्पर्श का बहिष्कार करें और ऐसी जगह न जाएँ जहाँ आप ऐसा कुछ कर सकते हैं जो आप नहीं चाहते कि अन्य लोग जानें। आप दोनों अकेले एक स्थान में न जाएँ और वह भी बन्द दरवाजों के अन्दर। आप जानते हैं कि प्रत्येक शारीरिक स्पर्श में संलग्न है, परन्तु स्मरण रखें कि आप भिन्न हैं। आप अपने जीवन में पवित्रता के प्रति समर्पित हैं।
- **माता पिता** को जागने की आवश्यकता है। आपको अपने जवान बच्चों से बात करना है।

बाइबल कॉलेज

ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर, भारत ने अपनी सेवा का विस्तार करते हुए अपना बाइबल कॉलेज एवं सेवा प्रशिक्षण केन्द्र (ए.पी.सी. एवं एम.टी.सी.) अगस्त 2005 में आरम्भ किया है।

ए.पी.सी. एवं एम.टी.सी. विश्वासयोग्य पुरुषों और महिलाओं को तैयार एवं प्रशिक्षित करके भारत देश के गांवों, कस्बों और शहरों में तथा अन्य राष्ट्रों में भेजता है ताकि वे मसीह के लिए उन्हें प्रभावित कर सकें।

APC-BC &MTC अपोस्टोलिक काउंसिल फॉर एजूकेशनल अकाउंटैबिलिटी कोलोराडो स्प्रिंग्स, यू.एस.ए. (www.acea-schools.org) का एक सदस्य संस्थान है। APC-BC &MTC तीन कार्यक्रम प्रस्तुत करता है:

- ❑ दो वर्षीय **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्ण कालिका छात्रों को आत्मिक और व्यवहारिक सेवा तथा शैक्षणिक गुणवत्ता प्रदान करता है। यह कार्यक्रम इस प्रकार बनाया गया है ताकि छात्रों को प्रशिक्षित एवं सुसज्जित करके सफलतापूर्वक भेजा जाए ताकि वे अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट पूरी कर सकें। छात्रों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद **डिप्लोमा इन थियोलॉजी एवं क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

- ❑ **व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण** बाइबल कॉलेज के स्नातकों के लिए है जो यह प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। जो एक वर्ष या दो वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करते हैं उन्हें **सर्टीफिकेट इन प्रैक्टिकल मिनिस्ट्री** का प्रमाण पत्र दिया जाता है जिसमें बिताए गए समय का उल्लेख होता है।

कक्षाएं अंग्रेजी भाषा में संचालित की जाती हैं। प्रशिक्षकगण प्रशिक्षित और वचन के अभिषिक्त गण होते हैं। सभी प्रशिक्षकों और छात्रों को ए.पी.सी अध्ययन केन्द्र और पुस्तकालय को प्रयोग करने की अनुमति होती है। अध्ययन केन्द्र और पुस्तकालय में पुस्तकें, शिक्षा के टेप, वीडियो, VCD और DVD तथा संगीत की सी.डी. उपलब्ध हैं।

ऑल पीपुल्स चर्च के प्रकाशन

स्वर्ग एक वास्तविक स्थान
प्रत्येक बात का एक समय
आत्मिक मन और सांसारिक बुद्धिमान का होना
कार्य के प्रति बाइबल का दृष्टिकोण
व्यक्तिगत और पुरखाओं के बन्धनों को तोड़ना
बदलाव
नगरीय कलीसिया का ईश्वरीय क्रम
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
अपने पासवान की सहायता कैसे करें?
सच्चाई
यीशु मसीह–शृंखला 1
राज्य को बनाने वाले
चिन्तामुक्त जीवन जीना
हमारा छुटकारा
मन का युद्ध
प्रभु एक योद्धा है
जीवन की अंधेरी रातें
समर्पण की सामर्थ
परखने वाले की आग
बुद्धि प्रकाशन और सामर्थ का आत्मा
भविष्यवाणी को समझना
हम भिन्न हैं
हम मसीह में कौन हैं?
कार्यस्थल पर महिलाएं

सुसमाचारीय पुस्तिकाएं

वह यहाँ है
वह प्रेम जो स्वयं प्रेम से गहरा है
मेरे पाप कैसे धुल सकते हैं?

ऑल पीपुल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपुल्स चर्च में हमारा दर्शन यह है कि हम बंगलौर शहर में नमक और ज्योति बनें और भारतवर्ष तथा संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज बनें।

हम ए.पी.सी. चर्च में सम्पूर्ण, बिना समझौते के और उसके पवित्रात्मा के प्रदर्शन के साथ प्रस्तुत करने हेतु समर्पित हैं। हम यह विश्वास करते हैं कि अच्छा संगीत, सृजनात्मक प्रदर्शन, तेज़ प्रार्थना, तत्कालीन सेवा के तौर तरीके आदि परमेश्वर के वचन को पवित्रात्मा की सामर्थ में वचन के प्रचार तथा चिन्ह, चमत्कार और पवित्रात्मा के वरदानों का विकल्प नहीं बन सकते हैं (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। **हमारी विषय वस्तु यीशु है, हमारा विषय वचन है, हमारा तरीका पवित्रात्मा की सामर्थ है, हमारी लगन लोग हैं और हमारा उद्देश्य मसीह के समान परिपक्वता है।**

क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें (2 कुरिन्थियों 4:5; कुलुस्सियों 1:28)।

हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिली होगी। यह हमारी ओर से आपके लिए एक भेंट है। यह मुफ्त है!

हजारों प्रतियाँ आप जैसे लोगों को मुफ्त में बांटी जाती हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे आर्थिक सहयोगी बनें ताकि हम परमेश्वर का वचन बहुतों के साथ बांट सकें। आपके लगातार आर्थिक अनुदानों से हमें परमेश्वर का वचन अन्य लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। जैसा प्रभु आपको अगुवाई करे, आप ऑल पीपुल्स चर्च के सहयोगी बन सकते हैं। आप अपने दान के चैक / डिमाण्ड ड्राफ्ट / मनीआर्डर **''ऑल पीपुल्स चर्च, बंगलौर''** के नाम भेज सकते हैं। जब आप हमें लिखें तो आप अन्य प्रकाशनों हेतु भी निवेदन करें। हमें यह भी लिखें कि इस पुस्तक ने आपकी कैसे सेवा की है, साथ ही अपने प्रार्थना निवेदन और टिप्पणी भी भेजें।

आप हमें निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं:

ऑल पीपुल्स चर्च
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत
फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

भारत में ऑल पीपुल्स चर्च

इस समय ऑल पीपुल्स चर्च की शाखाएं भारत में निम्नलिखित शहरों में हैं :

ऑल पीपुल्स चर्च–बंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–थोकोटू, मंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–कल्याण, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पीपुल्स चर्च–विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)

ऑल पीपुल्स चर्च–सोनितपुर (आसाम)

ऑल पीपुल्स चर्च–बेरहामपुर (उड़ीसा)

ऑल पीपुल्स चर्च–नागपुर (महाराष्ट्र)

समय समय पर पूरे भारत में नई कलीसियाओं की स्थापना की जा रही है। वर्तमान सूची और ऑल पीपुल्स चर्च की सम्पर्क सूचना प्राप्त करने हेतु कृपया हमारे बेबसाइट www.apcwo.org पर देखें अथवा contact@apcwo.org पर ईमेल भेजें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!